दूसरा अध्याय

रहीम के समय की विभिन्न परिस्थितियाँ

अध्याय दूसरा :

रहीम के समय की विभिन्न परिस्थितियाँ

साहित्य अपने युग और समाज का दर्पण होता है। हिन्दी साहित्य का भक्ति - काव्य अपने युग की उपज था। देश में इस काल में विदेशी लोग आक्रमण कर रहे थे। यहाँ के हिन्दू राजा अपने - आप में झगड रहे थे। इसका फायदा बाबर , अकबर , हुमायूँ आदि ने लिया और वे अपने साम्राज्य का विस्तार करने लगे। इस प्रकार देश के लोगों पर विदेशी शक्तिओं का प्रभाव बढ गया। लोगों में असुरक्षितता की भावना बढ गयी। विदेशी - आक्रमण के कारण समाज में नैतिकता का -हास होने लगा।

एक ओर देश पर आक्रमण हो रहे थे तो दूसरी ओर समाज पतन की ओर जा रहा था। यह परिस्थिति कबीर , सूर , तुलसी , जायसी जैसे संतों ने जान ली और वे इस परिस्थिति का विरोध करने लगे। इन संतो ने अपने - अपने भक्ति संप्रदाय की स्थापना की। भगवान विष्णू के दो रूप राम और कृष्ण सगुण भक्तों के आराध्य् दैवत बन चुके। संत कबीर और जायसी ने निर्गुण धारा को अपनाया। ये संत लोग अपने विचारों द्वारा समाज में प्रबोधन करने लगे। ऐसी स्थिति में रहीम ने अपने नीतिकाव्य द्वारा अपना एक अलग स्थान बनाया। रहीम ने हिन्दू धर्मग्रंथों का गहरा अध्ययन किया था। यह बात रहीम के कई उदाहरणों द्वारा समझ में आती है। उदा -

> जे गरीब पर हित करैं , ते रहीम बड लोग।
> कहाँ सुदामा बापुरो , कृष्ण मिताई जोग ॥ [१]

रहीम के नीतिकाव्य को जानने के लिए उस काल की परिस्थितिओं को समझना आवश्यक है। हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल को भी जानने के लिए उस काल की सामाजिक , राजनीतिक , सांस्कृतिक , आर्थिक , साहित्यिक

आदि परिस्थितियाँ समझ लेनी चाहिए। भक्तिकाल सं. १३७५ से १७०० तक माना जाता है। इस काल की विभिन्न परिस्थितियाँ निम्न. प्रकार की हैं।

१) राजनीतिक परिस्थिति :

रहीम भक्तिकाल के नीतिकाव्य के कवि हैं। इस काल में भारत में विदेशी मुस्लिम - साम्राज्य की सत्ता थी। मुस्लिम सम्राट बाबर, हुमायूँ, जहांगिर, अकबर जैसे सम्राटों का यह संघर्ष काल है। इसके साथ समाज में अराजकता भी निर्माण हो गयी थी। इन मुगलों का यहाँ के हिन्दू राजा विरोध कर रहे थे। परंतु इन राजाओं की शक्ति कम पड रही थी। क्यों कि ये राजा आपस में झगड रहे थे। जिसका फायदा मुगल सम्राटों ने उठाया था।

इस काल में मुहम्मद गौरी ने जो प्रदेश जीत लिए थे वहाँ तुर्कों ने अपना राज्य बसा लिया था। ये तुर्क लोक विदेशी थे, परंतु उनके खून के रिश्ते यहाँ के हिन्दुओं के साथ निर्माण हुए थे। रामबहोरी शुक्ल ने अपनी किताब में लिखा है कि - "कुछ की धमनियों में हिन्दू रक्त भी बहता था। गयासुद्दीन तुगलक की माँ पंजाब की जाटनी थी।"[२] तुर्कों के बाद पठानों ने राज्य किया। उनके पूर्वज हिन्दू और बौध्दी थे। इस प्रकार एक सत्ता के बाद दूसरी सत्ता आती रही और सामान्य प्रजा की स्थिति दयनीय होती गयी।

इसके बाद सन १२९५ ई. अल्लाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली का शासन हासिल किया। उसने मालवा और महाराष्ट्र के साथ गुजरात जीतकर चितौड, सिवाना, जालौर, रणथम्भौर आदि प्रदेश जीत लिए। इसी तरह से दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन पहुँचा। परंतु अल्लाउद्दीन के मरते ही दिल्ली का

शासन ढीला पड गया। तब गयासुद्दीन ने फिर से प्रयत्न किए। ऐसे में प्रांतीय शासक स्वतंत्रता की घोषणा करने लगे। इसी समय मेवाड में सिसोदिया और विजयनगर के हिन्दू राज्य निर्माण हुए। तो दक्षिण में बहमनी सल्तनत की स्थापना हो गयी। इधर काश्मीर में शाहमीर ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

१६ वी शताब्दी में जब बाबर ने आक्रमण किया था तब सभी और छोटे - छोटे राज्य थे। भारत में दो प्रमुख शासक थे, एक मेवाड का राणासांगा और दूसरा विजयनगर का कृष्णदेवराय। बाबर ने पानिपत का युध्द जीतकर दिल्ली का शासन प्राप्त किया। बाबर के बाद हुमायूँ के काल में मुगलों का साम्राज्य विस्तार नहीं हो सका। परंतु उसके बाद अकबर के आते ही मुगल सत्ता का फिर से विस्तार हुआ। अकबर पराक्रमी था। उसके ही दरबार में रहीम के पिता बैरमखाँ थे। बैरमखाँ शूर होने के कारण उसके शौर्य पर अकबर खुश था।

मुगलों के काल में हमेशा युध्द का वातावरण होने के कारण यह काल अशांत था। मुगलों का सारा समय मारकाट, गृह - कलह, विदेशी आक्रमणों से लडते बीत गया। मात्र सम्राट अकबर के काल में उसकी उदारमतवादी दृष्टि के कारण संगीत, कला, काव्य को प्रोत्साहन मिला। कवि रहीम पर अकबर की उदारमतवादी दृष्टि का गहरा प्रभाव पडा।

सामाजिक परिस्थिति :

जहाँ राजनीतिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी वहाँ सामाजिक परिस्थिति का तो क्या कहना ? चौदहवीं, पंद्रहवीं शताब्दी में भारतीय राज्य एक - एक ठोकर से गिरते गए। जो शासक थे वे हिन्दू - मुस्लीम थे। इनके सामने प्रजा का और संस्कृति का विचार था। हिन्दू और मुस्लिम शासक अपनी - अपनी संस्कृति के बारे में सोच रहे थे। हिन्दू - मुसलमानों में जीवन के सभी क्षेत्रों में आदान - प्रदान होने लगा।

ऐसी सामाजिक परिस्थिति में रहीम का जन्म हुआ था। इन परिस्थितिओं का उनपर सहज ही प्रभाव पड गया। मुगल लोग भोग - विलासि होने के कारण स्त्रियों पर अत्याचार होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू जाति ने अपनी जाँत - पाँत के और शादी - ब्याह के बंधन अधिक कडे किए। इतना ही नहीं बाल - विवाह और पर्दा पध्दति का अवलंब होने लगा। जाति के बंधन कडे होते जा रहे थे उनका रामानन्द, कबीर ने विरोध किया।

मुगलों का जीवन विलासी होने के कारण वे औरों की बहू - बेटियों का अपहरण करते थे। सुंदर स्त्रियों को चुन - चुनकर अपने जनानखाने में रखते थे। इतना ही नहीं मुसलमान और हिन्दुओं में शासक और शासित का भेद होने के कारण हिन्दुओं पर अत्याचार किए जाते थे। अकबर के काल में अगर हिन्दू युवती से कोई मुस्लीम शादी करता तो जो धर्म पति का है उसे वह स्वीकारती थी। कई हिन्दू स्वेच्छा से मुसलमान बने थे। रहीम की माँ भी पहले राजपूत थी, बाद में मुसलमान बनी थी।

मुगलों के वर्चस्व के कारण दिन - ब - दिन सामान्य जनता दबती जा रही थी। समाज में जातिभेद ने प्रवेश किया। समाज में उच्च और नीच की भावनाएँ प्रबल बनी थीं। हिन्दुओं की दृष्टि संकीर्ण हो गयी। जाति - पाँति के बंधन कडे बनाये गये। मुगलों के अत्याचार के कारण समाज में नैतिकता का ऱ्हास होने लगा था। यह सारी परिस्थिति रहीम ने जान ली और अपने काव्य में नीति के विचार व्यक्त किए।

धार्मिक परिस्थिति :

हिन्दू धर्म पर मुस्लिम धर्म का प्रभाव पडने लगा। धार्मिक परिस्थिति भी गिरने लगी थी। इस काल में महात्मा बुध्द के महानिर्वाण के पश्चात् बौध्द धर्म अनेक संप्रदायों में विभक्त हुआ था। हीनयान संप्रदाय सिध्दांत पक्ष की

जटिलता के कारण संकुचित बन गया था , तो महायान संप्रदाय अधिक उदारता के कारण विकृत बना था। इस ने ही जनता के असंस्कृत वर्ग को जंत्र - तंत्र से वशीभूत किया तब इसका नाम मंत्रयान पड गया।

आगे चलकर शंकराचार्य के सिध्दान्तों के कारण बौध्द धर्म पर प्रहार हुआ और वैदिक धर्म का प्रसार होने लगा। इसकी प्रतिक्रिया में अनेक संप्रदाय निकल पडे। उस में नारायर्ण के अवतारों की कल्पना की गई। स्वामी रामानन्द ने परिस्थिति पहचानकर राम की भक्ति का द्वार सब के लिए खोल दिया।

दूसरे अवतार में कृष्ण की उपासना होने लगी महाभारत में वर्णित , अधर्म का विनाशक , दुष्टों का संहारक यह कृष्ण का रूप न होकर भागवत के दशम स्कन्ध में जो रूप था उसका ग्रहण किया था। इस प्रकार धर्म के क्षेत्र में समाज के सम्मुख विविध प्रकार के आदर्श प्रस्तुत हुए। इस धार्मिक परिस्थिति का प्रभाव रहीम पर पड चुका। इस काल में अकबर में धार्मिक सहिष्णुता होने के कारण उसके दरबार में अनेक धर्म के लोग थे। रहीम ने अपने काव्य में श्रीकृष्ण का वर्णन किया है। इसलिए रहीम ने हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया था।

आर्थिक परिस्थिति :

रहीम के काल में वित्त और अर्थशास्त्रसंबंधी किसी सैध्दांतिक विज्ञान का विकास नहीं हुआ था। परंतु उच्च- अधिकारी आर्थिक परिस्थिति से परिचित थे। समाज में आर्थिक विषमता अधिक थी। आर्थिक विपन्नता का वर्णन करते हुए डॉ. शिवकुमार शर्माजी ने लिखा है कि -

" उन हिन्दुओं के पास धन संचित करने के कोई साधन नहीं रह गए थे और उनमें से अधिकांश को निर्धनता , अभावों एवं आजीविका के लिए निरंतर संघर्ष में जीवन बिताना पडा था। " [3]

इस काल में सम्राट अकबर ने जजिया कर बंद किया था। गाँव का मुखिया राज्य के अधिकारियों को मालगुजारी की वसूली में सहायता करता था। माल पर सीमा - शुल्क लगाया जाता था। राज्य - कर्मचारियों की मृत्यु के पश्चात् उनकी संपत्ति राज्य की हो जाती थी।

मुंशियों और निम्न कर्मचारियों के अतिरिक्त प्राय: सभी कर्मचारियों को वेतन मन्सबदारी प्रथा के अनुसार मिलता था। अच्छा पराक्रम या काम करने के बाद जागीर दी जाती थी। रहीम के पिता बैरमखाँ ने भी पराक्रम से ही अकबर की ओर से अनेक पद प्राप्त किए थे। बैरमखाँ को " खानखाना ", " मीर अर्ज " की उपाधि प्राप्त हो गयी थी। साथ ही दरबार का उच्चतम पद "वकील मुतलक" मिला था। डा. समर बहादुरसिंह ने लिखा है कि -

" साम्राज्य के सर्वप्रथम वकील होने का गौरव खानखाना के पिता बैरमखाँ को प्राप्त था। " [४]

? आगे चलकर टोडरमल राजा की मृत्यु के पश्चात् यह पद रहीम को मिला था।

साहित्यिक परिस्थिति :

रहीम के समय धार्मिक संघर्ष के कारण लोगों के विचारों में परिवर्तन आ रहा था। इस काल के साहित्य के बारे में शिवकुमार शर्मा ने लिखा है कि - " जो साहित्य लिखा गया वह गदय में न होकर पदय में लिखा गया। संस्कृत में इस संबंध में टीकाओं , व्याख्याओं की सृष्टि होती रही। " [५]

इस काल के संत सिध्दान्त प्रतिपादन तथा भक्ति प्रसार की भावना के कारण कवि न रहकर प्रचारक बन गए। कबीर, सूर , तुलसी और जायसी पर भी इस बात का प्रभाव पडा था।

इस समय में हिन्दू जाति के उच्च वर्ग के लोग संस्कृत में अपना पांडित्य प्रदर्शन करने में लगे हुए थे मुगलों ने तो फारसी भाषा को अपनी राजकाज की

भाषा बनायी। रहीम ने भी हिन्दी, फारसी, संस्कृत भाषाएँ सीख लीं। फिर भी अधिकतर अपना काव्य रहीम ने हिन्दी में लिखा है। इस काल में अनेक ग्रंथों का अनुवाद हुआ। इसके बारे में शर्माजी लिखते हैं कि - " फारसी में संस्कृत के अनेक धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथों का अनुवाद हुआ।"[६] रहीम ने इसका फायदा उठाते हुए संस्कृत भाषा के ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद किया।

रहीम के काल में भगवान के सगुण और निर्गुण रूपों की भक्ति का प्रचार हुआ था। भगवान की भक्ति के प्रचार के साथ - साथ बादशाहों एवं राजाओं के आश्रित कवि शृंगार, रीति, नीति आदि के संबंध में मुक्तक और प्रबंध की रचनाएँ करने लगे। तब रहीम ने नीति पर आधारित अपने दोहे लिखे। इस दृष्टि से यह साहित्य श्रेष्ठ है। इसके बारे में शिवकुमार शर्माजी लिखते हैं कि - " इस काल का साहित्य हृदय, मन और आत्मा की भूख को तृप्त करता है "[७]

सांस्कृतिक परिस्थिति :

रहीम के समय की सांस्कृतिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी। पहले से ही भारतीय संस्कृति की विशेषता समन्वयात्मक रही है। इस में पूजा - उपासना और कर्मकांड में दर्शन को महत्त्व दिया गया है। मूर्ति - पूजा, तीर्थ यात्रा, धर्म - शास्त्रों का सम्मान, अवतारवाद, और गो - ब्राह्मण की पूजा पौराणिक धर्म की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसके साथ ही शैव, शाक्त, भागवत जैसे प्रमुख धर्मों में ज्ञान, योगतंत्र और भक्ति की प्रवृत्तियों का समन्वय होने लगा। इतना ही नहीं तो भक्ति, ज्ञान, और कर्म के साथ योग शब्द भी जोड दिया गया राम और शिव, भगवती दुर्गा और वैष्णवी में समन्वय किया गया।

वास्तुकला में भी समन्वय होने लगा। कैलास मन्दिर में शिव की मूर्ति के ऊपर बोधिवृक्ष है। रहीम के काल में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ निकट आयीं। जिसका प्रभाव रहीम के साहित्य पर दिखायी देता है। हिन्दू - मुस्लिम दोनों जातियों का साहित्य एवं शैलियाँ एक दूसरे से प्रभावित हुईं और संगीत , कला , चित्र आदि में समन्वय हुआ। उदा. ताजमहल और लाल किला भारतीय और ईरानी वास्तुकलाओं का समन्वय है। इस काल में रहीम ने फारसी , संस्कृत , हिन्दी भाषाओं को अपनाकर अपना साहित्य निर्माण किया है।

निष्कर्ष :

रहीम के समय की उपर्युक्त परिस्थितियों को समझने के बाद यह ज्ञात होता है कि रहीम पर उस काल की सामाजिक , धार्मिक , साहित्यिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पडा था। रहीम मुस्लीम जाति के थे, परंतु हिन्दू धर्म के प्रभाव के कारण तत्कालीन संस्कृत भाषा में उन्होंने अपना साहित्य लिखा। रहीम ने अपने जीवन में जो अच्छे - बुरे प्रसंगों का अनुभव लिया उन्हें भी साहित्य में व्यक्त किया।

संदर्भ सूची

(१) रहीम ग्रंथावली
संपा. मिश्र विद्यानिवास, गोविन्द रजनीश।
समीर प्रकाशन, प्रथम संस्करण
दोहा क्र. ६८, पृष्ठ सं. ८३.

(२) हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
शुक्ल रामबहोरी
प्रकाशक - इन्द्रचन्द्र नारंग, हिन्दी भवन
प्रथम संस्करण १९५६, पृष्ठ सं. ८७

(३) हिन्दी साहित्य-युग और प्रवृत्तियाँ
शर्मा शिवकुमार, अष्टम संस्करण
पृष्ठ संख्या ११४

(४) अब्दुर्रहीम खानखाना
डा. समर बहादुरसिंह
प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं. ७९

(५) हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ
शर्मा शिवकुमार, अष्टम संस्करण
पृष्ठ सं ११४

(६) हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ
शर्मा शिवकुमार, अष्टम संस्करण
पृष्ठ सं. ११५

(७) हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ
शर्मा शिवकुमार, अष्टम संस्करण
पृष्ठ सं. ११५